१. दूसरे की बुराई से मुस्लमान को महफ़ूज़ रखने के लिए बशुमूल उन हालतों के जब शादी ब्याह के बारे में उसे पूछा जाए।

२. जिसके बारे में बात की जा रही है वह अपने उयूब को अलल एलान करे और शरई हुदूद की खिलाफ वर्ज़ी करता हो और उसे पोशीदा न रखता हो।

३. तबीब के सामने मरीज़ के उयूब बयान करना इलाज के लिए।

४. रीतिरिवाज (समाजी मसाएल) के बारे में बताने वाले का तब से यानी वह उन उयूब का ज़िक्र भी करे और उनका हल भी बताए।

इस मर्ज़ की बीमारी:

खुदानाख्वास्ता अगर कोई यह बुराई अंजाम देता है तो इस बुराई को छोड़ने की कोशिश करे और इखलास की तरफ बढ़े।

इसके बुरे असरात से खुद को आगाह कीजिए। और अपने आप को उस डरावनी सूरतों से डराए जो बरज़ख के होगी। रसूल और अइम्मा की बातों को याद करे। सोचें की क्या यह नहीं की जरा देल लुत्फ उठा कर हमेशा के लिए जहन्नुम में फेंक दिया जाए।

सोचे अगर आपकी किसी से दुश्मनी है। और आप उसकी ग़ीबत करते हैं तो दुश्मनी में भी उसकी ग़ीबत न कीजिए। रिवायतों में कहा गया है कि ग़ीबत करने वाले के अच्छे काम जिसकी ग़ीबत की जा रही है उसके हिसाब में लिख दी जाती है और इसकी बुराईयाँ ग़ीबत अपनी गलती की मांफी मांगे। जिसकी आपने ग़ीबत की, उससे।

अपने को इन बुराई से आज़ाद कराने के लिए अपने आप पर खुद ग़ौर कीजिए और अपनी ज़बान को संभालिए। कुछ दिन बाद इन्शाअल्लाह आप इस बुराई से नफरत करने लगेगें और अंदरूनी खुशी महसूस करेगें।

ग़ीबत करने वाला अक्सर एहसासे कमतरी का शिकार होता है तो उसे ढूंढना चाहिए कि उसमें क्या कमी है।

नतीजा :

रसूल (स.अ.) ने फरमाया, ''**कोई आज लड़की को उतनी जल्दी नहीं रहा ासकती जितनी जल्दी के ग़ीबत एक मोमिन के इमान को।**

(अल मोहज्जतुल बैज़ा, वेलयुम ५, पृ, २६४) (कुरआन सूरा न. १७ आयत न. ७८)

रूह की बिमारियाँ ''ग़ीबत''

रसूले अकरम ने इमाम अली (अ.स.) से फरमाया :

''ऐ अली'' **अगर कोई अपने मुस्लिम भाई की गीबत होते हुए सुनता है और वह जिसकी ग़ीबत की जा रही हो उसकी मदद नहीं करता है (क़ब्र रखते हुए भी) तो खुदा उसे इस दुनिया और दूसरी दुनिया में ज़लील व रुसवा करेगा।**

(अलहुए अलआमली, वसाएलुश शीआ , ०८ हदीस न. १६३३६)

रूह की बिमारियाँ ''ग़ीबत''

अबूज़र ने एक बार रसूलल्लाह (स.अ.) से दरयाफ्त किया। ''ऐ खुदा के रसूल ग़ीबत क्या है? फरमयाा रसूल (स.अ.) ने। ''**अपने भाई (मुस्लिम) के और में कोई ऐसी बात करनाजो उसे पसन्द नहीं।**'' आपने मज़ीद पूछा। ''ऐ खुदा के रसूल (स.अ.) अगर जो बाते कही जा रही है। वह उसमें मौजूद हो तो।?'' आपने जवाब दिया, ''**के अगर तुमने वह बताया के जो वाकेअन उसमें है तो तुमने उसकी ग़ीबत की और अगर तुमने वह बताया जो उसमें नहीं है तो तुमने उसका क़त्ल कर दिया।**

(अल हुरः अलअमली, वेलयुम ८, हदीस १६३१२)

ग़ीबत के नताएजः

एक बार रसूल (स.अ.) अबूज़र को कुछ तालीस कर रहे थे तब उन्होंने फरमाया ''**ऐ अबूज़र ग़ीबत से बच क्योंकि ग़ीबत क़त्ल से ज़्यादा सख़्त है तब अबूज़रत ने पूछा वह कैसे?**

तब आपने फ़रमाया ''**जब एक इंसान कत्ल करता है तो वह खुदा से माफ़ी मांगता है और खुदा उसकी तौबा को कुबूल कर लेता है लेकिन ग़ीबत की माफ़ी उस वक़्त तक नहीं मिलेगी जब तक वह शख्स खुद मुआफ न करदे।**''(१८३१२)

फरमाया रसूलल्लाह ने ''**जो शख्स किसी की ग़ीबत करगेा गोया अपना रोज़ा और वज़ू तोड़ डाला। और क़यामत के रोज़ उसका मुंह एक सड़े हुए मुर्दे से ज़्यादा खराब होगा। और साथ जो लोग खड़े होंगे उनको उसे यह देखकर किराहियत महसूस होगी और अगर वह बगैर माफ़ी के मर गया तो गोया उसकी मौत काफ़िर की मौत है।**(१६३१६)

छटे इमाम (अ.स.) फरमाते हैं कि फ़रमाया रसूल्लाह (स.अ.) ने ''**के ऐ वह लोग जिन्होंने इस्लाम को खाली ज़बान से कुबूल किया है और जिनके दिलों में ईमान नहीं है तो वह मुस्लमानों को नीचा न दिखाए और उनकी बुराईयाँ न ढूंढ क्योंकि जो उनकी बुराईयाँ ढूढेगा खुदा उनकी ख़ामियाँ ढूंढेगा वह ज़लील होगा वह ज़लील होगा।**''

(ईमान वल कुफ्र बावुलतुलबा असरातल मोसिनीन हदीस २)

इमामे सादिक से रिवायत है कि फ़रमयाा रसूल (स.अ.) ने ''**के ग़ीबत इंसान के ईमान को इस तरह से नुकसान पहुँचाती है जैसे अकलाह (बीमारी) जिस्म** के हिस्सों को।

(अरकुलैनी, बाबुलग़ीबा हदीस न. १)

ग़ीबत हमारी रूह पर बुरे असरात छोड़ती है इससे जिसकी ग़ीबत की जा रही है उस से दुश्मनी बढ़ती है मौत के वक़्त जब उनके सामने से पर्दे हटाए जाते हैं तब वह देखते हैं कि जिसकी ग़ीबत की गई है वह खदा के नज़दीक है और नेमते खुदावंदी उस पर बरस रही है इसीलिए ग़ीबत करने वाला जलन का बाइस इस मंज़र को देखकर खुदा से भी जलने लगेगा। तो वह खुदा की नफ़रत दिल में लिए दुनिया से जाएगा और हमेशा उस पर लानत पड़ती रहेगी।

ग़ीबत सुनने की मनाही

जिस तरह ग़ीबत करना मना है उसी तरह ग़ीबत सुनना कभी कभी सुनने वाला भी ग़ीबत करने वाले की तरह होता है। और उसे उस शख़्स से माफ़ी मागनी चाहिए। ग़ीबत फरमाया रसूले अकरम ने, ''**सुन्ने वाला दो ग़ीबत करने वालों में से एक होता है।**''

(अलफाएज, अलकाशानी, मोहज्जात, अलबैज़ा, वेलयुम. ५, ज. २६०)

इमामे सादिक (अ.स.) से रिवायत है कि रसूलल्लाह ने ग़ीबत करना और ग़ीबत सुन्ना दोनों मना किया है। फिर उन्होंने फ़रमाया है। ''**जिसने अपने मुस्लिम बाईकी ग़ीबत सुनी तो खुदा उसे एक हाजर बुराईयों से बचाएगा (इस दुनिया और आखरत में) और अगर मना न फ़रमाया तो उसके ऊपर ७० ग़ीबत करने वालों का अज़ाब होगा।**

(अलहुर, अलअमिली, वसाउल शीआ, वेलयुम ८, हदीस १६३१६)

कुछ लोग ग़ीबत सुन्ने में तज्जुस दिखाते हैं और ग़ीबत नहीं मानते ऐसा आदमी हैरत से पूछता है ताकि ग़ीबत करने वाला और ज़्यादा ग़ीबत करे उसे उकसाने के लिए वह कहेगा ''हरत अंगेज़'' ''अस्तग़फेरुल्लाह'' या मुझे नहीं मालूम था के वह ऐसा भी कर सकता है। ग़ीबत की हिमायत करना ऐसा ही है जैसे ग़ीबत करना या फिर उसको सुन्ना और सुनकर ख़ामो रहना।

(अलशाहिद अलसानी कबयानर चालिस हदीस आयतुल्लाह खुमैन।)

क्या ग़ीबत की कभी इजाज़त दी गई है।

बहुत काम ऐसे हालात होते हैं सिके किसी दूसरे इंसान की कमियों के बारे में कहने की इजाज़त है। कहने वाले को बहुत एहितयात करना चाहिए बताते वक़्त वह गुनाह की सरहद में न दाखिल हो जाए। उन हालतों में से कुछ यह है।